एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में गोभी वर्गीय फसलों की नर्सरी तथा प्रमुख रोग

(*अमृतपाल सिंह, डॉ पी के यादव, डॉ आर के नारोलिया एवं महेश कुमार मिमरोट)
स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
* aman.raman13@gmail.com

राजस्थान का पश्चिमी क्षेत्र मुख्यतया मानसून पर निर्भर करता है इन क्षेत्रों में पानी की कमी पायी जाती है इसके वावजूद बूंद- बूंद सिंचाई के माध्यम से गोभी वर्गीय फसलों की खेती की जा सकती है ताकि दूसरो क्षेत्रों से आत्मनिर्भता कम की जा सके। इसके साथ साथ किसानो को भी अच्छी आय प्राप्त हो सके।

शुष्क क्षेत्रों में ध्यान देने योग्य मुख्य बाते -

1. फूलगोभी की खेती करने के लिए उचित नर्सरी का समय का पता होना जरूरी है राजस्थान का पश्चिमी क्षेत्र में अगस्त माह तक तापमान बहुत अधिक रहता है जिससे नर्सरी लगाने में बहुत समस्या आती है जैसे कि जर्मिनेशन न होना, नव पौधो का जलना आदि। इससे बचने के लिए नर्सरी को ग्रीन शेड में लगाया जा सकता है इससे 4-5 ० C तापमान कम हो जाता है तथा अर्ली किस्मो की खेती कर किसान ज्यादा आय कमा सकते है।
2. गोभी वर्गीय फसलों की नर्सरी हमेशा उथली वेड पर ही लगानी चाहिए ताकि जल भराव की समस्या से बचा जा सके। गोभी वर्गीय फसलों की नर्सरी लगाने से पहले फोर्मलिन से नर्सरी को उपचारित करना चाहिए।
3. नर्सरी में पानी हल्का ही देना चाहिए ताकि डम्पिंग ऑफ जैसे रोग से बचा जा सके।
4. शुष्क क्षेत्रों में गोभी वर्गीय फसलों के पौधरोपण हमेशा सुबह या शाम कर समय ही करना चाहिए ताकि मोर्टिलिटी से बचा जा सके।

शुष्क क्षेत्रों में लगने वाले प्रमुख रोग

मृदुरोमिल आसिता (डाउनी मिल्डयू): यह एक प्रमुख कवक रोग है, जो पैरोनोस्पोरा पैरासिटिका की वजह से उत्पन्न होता है। इस रोग के लक्षण पत्तियों की निचली सतह पर बैंगनी, भूरे धब्बों का पड़ना है। इन धब्बों पर ऊपरी सतह में भूरे या पीले धब्बे दिखाई देते हैं। यह नर्सरी में विनाशकारी है तथा शायद ही कभी मुख्य क्षेत्र में गंभीर रूप में प्रकट होता है।

प्रबंधन:

यह बीज जनित रोग है, इसलिए बीज को बोने से पहले एप्रन 35 एसडी 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।गोभी वर्गीय फसलों में नर्सरी क्षेत्र को खरपतवारों से मुक्त रखें क्योंकि खरपतवार ही कोमल फफूंदी को नर्सरी के पौधों में फैलाने में मुख्य सहायक होते हैं। इन फसलों में सुबह-सुबह नर्सरी में पानी देने से बचें क्योंकि उस समय ओस पत्ताोें पर मौजूद रहती है।

आर्द्र गलन: यह रोग राइजोक्टोनिया सोलेनाई नामक कवक से फैलता है और नर्सरी क्षेत्र में अधिक प्रकोप होता है। प्रभावित नए अंकुर जमीनी स्तर के पास तना लाल भूरे रंग का दिखाई देता है। प्रभावित अंकुर अंत में सूख जाता है, जब पौध घनी और अत्यधिक मात्रा में उगती है, तब यह बीमारी अधिक तीव्रता से फैलती है।

प्रबंधन: वर्गीय फसलों के बीज को अधिक घना नहीं बोना चाहिए। बीज बोने से पहले कैप्टान 50 डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम प्रति किलोग्राम से बीज को उपचारित करना चाहिए।

तना सडन (स्टेम राट): तना सड़न रोग स्क्लेरोटिनिया स्क्लेरोशिओरम नामक कवक के कारण होता है। रोग की प्रारंभिक अवस्था में दिन के समय पौधे की पत्तियां लटक जाती है और रात्रि में पुन: स्वस्थ दिखाई देती है। तने के निचले भाग पर मृदा तल के समीप जल सिक्त धब्बे दिखाई देते है। धीरे-धीरे रोगग्रसित भाग पर सफेद कवक दिखाई देने लगती है व तना सड़ने लग जाता है। इसे सफेद सडन भी कहते है।

प्रबंधन: बाविस्टीन 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। डायथेन एम. 45, 2.0 ग्राम व बाविस्टीन 1 ग्राम को मिलाकर 15 दिन के अन्तराल पर जब फूल बनना प्रारभ हो 3 छिड़काव करें।